1

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

इन्द्र मा स्तेन ईशत। **अथर्ववेद 20/127/13**

भगवन् !परमेश्वर्यशाली प्रभो ! चोर हम पर शासक न करें।

O Lord ! Let no thief ever govern or rule over us.

वर्ष 38, अंक 41 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 24 अगस्त, 2015 से रविवार 30 अगस्त, 2015
विक्रमी सम्वत् 2072 सृष्टि सम्वत् 1960853116
दयानन्दाब्दः 192 वार्षिक शुल्कः 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें- www.thearyasamaj.org/aryasandesh

विडम्बना
पशु बलि या संवेदना की बलि?

हमेशा एक प्रश्न मन में जन्म लेता है कि लोग पृथ्वी पर जीवन की उत्पत्ति के बारे में जानने की जिज्ञासा रखते हैं पर जो वर्तमान में जीव है जीवित हैं उसके प्रति संवेदना नहीं रखते; मैं विज्ञान को परिभाषित नहीं करता विज्ञान का महत्त्व अपनी जगह उचित है। पर धर्म में उन लोगों से प्रश्न जरूर हैं जो धर्म की आड़ में गेरूए वस्त्रों पर निरीह जीवों के खून के लगे धब्बे को उचित बताते हैं। आखिर ये पशु बलि, नर बलि क्यों और किसके लिए? यदि धर्म की बात करें तो इससे इनका कौन सा देवी या देवता खुश होता है। अपने ही बनाये जीवों का बहता रक्त देखकर? जहां तक वैदिक मत है पशुबलि धर्म के ठेकेदारों द्वारा स्थापित एक आडम्बर मात्र है। क्योंकि धर्म कभी जीव हत्या (पशुबलि) की आज्ञा नहीं देता। लेकिन जिस तरीके से ये लोग धर्म का पर्दा डाल कर निरीह बेजुबान पशुओं या जीवों का वध कर रहे हैं तो सहज ही प्रतीत हो जाता है कि उन्हें धर्म के अर्थ का ही नहीं पता। यदि पता होता तो क्या ये घिनौना राक्षसी कृत्य करते! जहां तक मेरा मत है आर्य समाज और पशु अधिकार कार्यकर्ता पशुओं की बलि प्रथा बंद कराने के

नेपाल के बारा जिला स्थित बरियापुर में गढीमाई पर्व पर पहले दिन गढीमाई देवी की पूजा करने के लिए भैंसा, बकरा, तथा पक्षियों सहित हजारों की संख्या में पशुओं की बलि चढाई गयी यदि यह सच है तो नेपाल को हिन्दू राष्ट्र क्यों माना जाता है उसे मुस्लिम राष्ट मान लेने में बुराई क्या है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि आयोजकों ने दावा किया है कि इन पशुओं की बलि देखने यहां पर लगभग 50 लाख श्रद्धालुओं ने शिरकत की।

प्रयास में लगे हैं। वहीं दूसरी ओर नेपाल में धर्म के नाम पर लगभग पांच हजार भैंसों की बलि चढ़ाई गयी। प्रमुख समाचार पत्र 'द गार्जियन' की रिपोर्ट देखें तो नेपाल के बारा जिला स्थित बरियापुर में गढ़ीमाई पर्व पर पहले दिन गढीमाई देवी की पूजा करने के लिए भैंसा, बकरा, तथा पक्षियों सहित हजारों की संख्या में पशुओं की बलि चढ़ाई गयी यदि यह सच है तो नेपाल को हिन्दू राष्ट्र क्यों माना जाता है उसे मुस्लिम राष्ट्र मान लेने में बुराई क्या है? सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि आयोजकों ने दावा किया है कि इन पशुओं की बलि देखने यहां पर लगभग 50 लाख श्रद्धालुओं ने शिरकत की। कितनी अजीब धुंध छाई होगी अंधविश्वास कि 50 लाख लोगों को धर्म का ये घिनौना मार्ग दिखाई नहीं दिया। किसी के मन में उन जीवों के प्रति दया-संवेदना नहीं जागी! हालांकि इस वर्ष पहले बलि चढ़ने वाले भैसों की संख्या घटकर पांच हजार तक पहुंच गयी। भला हो भारत और भारतीय न्यायालय का जो पशुओं को नेपाल भेजने पर प्रतिबंध लगा दिया। लेकिन मैं फिर इसी प्रसंग पर आता हूं कि छत्तीसगढ़ के इलाकों में मंदिर के तथाकथित पुजारी और बैगा जाति के लोग पशु बलि को अपने रोजगार के अवसर के रूप में देखते हैं और विडम्बना यह है कि जब कभी ऐसी कुरीतियों को बंद करने की पहल की जाती है तब यह पाखंडी लोग इसका पुरजोर विरोध करते हैं। यदि आज हम इन कुरीतियों को बंद करने के लिये कानून की मांग करते हैं या कोई अपील करते हैं तो हमारी कमजोरी उजागर होती है। कारण, अधिसंख्य लोग वैदिक मत से दूर होकर पाखंड पर विश्वास करते हैं।आज के पढ़े-लिखे और प्रबुद्ध समाज के लोग इन मामलों में पत्राचार तक सिमट कर रह गये हैं और धार्मिक सामाजिक संगठन आपस में सामंजस्य स्थापित नहीं कर पाते हैं। यदि आज हम विश्व गुरु या विश्व परिवर्तन की बात करते हैं तो अभी यह भी जानना होगा कि अपने ही देश में अभी भी पशु-बलि, नर-बलि, डायन जैसी कुरीतियां समाज में अभी भी ज्यों-की त्यों जीवित हैं। इन कुरीतियों से बाहर निकलने के लिए हमें सामाजिक सहायता के साथ राजनैतिक दलों का सहयोग भी जरूर चाहिए होगा; कारण कई बार राजनैतिक दल इन मामलों में इस भय से चुप्पी साध जाते हैं कि कहीं उनका वोट बैंक न सरक जाये।

धंधा बनता धर्म !

पिछले कुछ दिनों से मीडिया के माध्यम से एक नया नाम उभरकर सामने आया है राधे मां। अभी तक निर्मल बाबा, रामपाल, आसाराम आदि बाबाओं के नाम सुन रहे थे कि अचानक एक और नाम धर्म के मैदान में धन, दौलत और शौहरत लेकर कूद पड़ा। पिछले दिनों से अखबार के पन्ने तथाकथित बाबाओं की चरित्रहीनता के किस्सों से भरे पड़े हैं। केन्द्रपाड़ा बारीमूल आश्रम के महंत सारथी बाबा उर्फ संतोष राउला जिसको ओडिसा के छोटे-मोटे किसान और कारोबारी भगवान मानते हैं। मीडिया के माध्यम से पता चला कि वह बाबा हैदराबाद के एक होटल में एम. बी. बी. एस. की छात्रा के साथ रंगरेलियां मनाते पकड़े गये। तीन चार रोज पहले सच्चिदानंद गिरि उर्फ बिल्डर बाबा नामक एक महंत एक फाइव स्टार होटल में मद्यपान करते पाये गये थे तो वहीं इन सबके बीच मां जैसे पवित्र, नैतिक शब्द को तार-तार करते राधे मां उर्फ सुखविन्दर कौर पाई गयीं। जिन्हें न धर्म का ज्ञान है न धर्म में कोई आस्था, जो न कुछ बोलती हैं और न ही कुछ कहती हैं किन्तु धर्म को धंधा बनाकर करोड़ों की स्वामिनी बनी बैठी हैं। इन सब किस्सों को पढ़-सुनकर लगता है कि कहीं ये धार्मिक

...शेष पेज 7 पर

''कश्मीर का सच'' पढ़ें पृष्ठ 2 पर

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन आस्ट्रेलिया 2015

दिनांक 27, 28, तथा 29 नवम्बर 2015

यात्रा विवरण

आपको सूचित करते हुए हर्ष हो रहा है कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली के तत्त्वावधान में इस वर्ष अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 27,28 तथा 29 नवम्बर 2015 को आस्ट्रेलिया के सिडनी शहर में सम्पन्न होने जा रहा है। इस सम्मेलन में सम्मिलित होने के लिये अनेक देशों के प्रतिनिधि सिडनी पहुंचेंगे। भारतवर्ष से भी इस सम्मेलन में भाग लेने हेतु बड़ी संख्या में आर्यजनों के पहुंचने की सम्भावना है।

सभी इच्छुक आर्यजन जो इस सम्मेलन में भाग लेने हेतु जाना चाहते हैं वे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के माध्यम से ही भाग ले सकेंगे। सार्वदेशिक सभा के द्वारा स्वीकृत सदस्यों को ही आर्य प्रतिनिधि सभा, आस्ट्रेलिया द्वारा प्रतिनिधि के रूप में स्वीकार कर उनकी व्यवस्था की जायेगी।

अनेकों आर्यजन इस अवसर पर आस्ट्रेलिया के अन्य महत्वपूर्ण स्थलों का भी भ्रमण करना चाहते हैं, इसलिये उनकी भावनाओं को ध्यान में रखते हुए आस्ट्रेलिया के अत्यन्त रमणीय एवं महत्वपूर्ण स्थानों की यात्रा का भी रोचक कार्यक्रम बनाया गया है। यात्राओं की जानकारी निम्न प्रकार है-

यात्रा नं. 1.

भव्य अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन यात्रा (6 रात्रि 7 दिन)

दिनांक 24 नवम्बर से 1 दिसम्बर 2015 तक

प्रस्थान : दिनांक 24 नवम्बर 2015 को दोपहर 13.15 बजे दिल्ली से सिडनी के लिये

वापसी : दिनांक 01 दिसम्बर 2015 भारत के लिए वापसी सुबह 09:45 बजे सिडनी से

...शेष पेज 3 पर

स्वाध्याय

प्रभो! मैं तो बस तेरा हूं

आ हि ष्मा सूनवे पितापिर्यजत्यापये। सखा सख्ये वरेण्यः।। -ऋ.1।26।3
ऋषिः-आजीगर्तिः शुनःशेपः।। देवता-अग्नि।। छन्दः- गायत्री।।

शब्दार्थ- पिता सूनवे-पिता पुत्र के लिए हि स्म आयजति- सर्वथा सहायता प्रदान करता है; उसकी कमी को पूरा करता है आपिः आपये- बन्धु, बन्धु के लिए वरेण्यः सखा सख्ये- श्रेष्ठ मित्र, मित्र के लिए सर्वथा सहायता प्रदान करता है।

विनय - संसार में पिता पुत्र-वात्सल्य से प्रेरित होकर पुत्र के लिए क्या नहीं करता। बन्धु, बन्धु के लिए जी-जान से पूरी सहायता करता है, श्रेष्ठ मित्र अपने मित्र के लिए सब-कुछ अर्पण करने को उद्यत रहता है, परन्तु हे प्रभो! तुम मेरे सब-कुछ हो। तुम्हारे होते हुए मुझे किसी वस्तु की कमी क्यों रहनी चाहिए? तुमसे मेरा जो सम्बन्ध है वह घनिष्ठ अटूट सम्बन्ध है; तुम्हें मैं किस नाम से पुकारूं? उस परिपूर्ण सम्बन्ध का वर्णन नहीं हो सकता। मैं संसार की भाषा में तुझे कभी पिता, कभी बन्धु, कभी सखा पुकारता हूं, परन्तु हे प्यारे! हे मेरी आत्मा! इन शब्दों से मेरा-तेरा वह सम्बन्ध व्यक्त नहीं हो सकता। जब मैं देखता हूं कि तुम मेरे पैदा करने वाले और लगातार पालने वाले हो, तब मैं अपनी भक्ति और प्रेम को प्रकट करने के लिए तुम्हें 'पिता-पिता' पुकारने लगता हूं और तुमसे पुत्र वात्सल्य पाने के लिए रोने लगता हूं। जब मुझे तुम्हारे घनिष्ठ सम्बन्ध की याद आती है - उस अटूट सम्बन्ध की जो मेरा संसार में और किसी से भी नहीं है, तब मैं बन्धु-भाव में विभोर होकर तुमसे बातें करने लगता हूं और जब देखता हूं कि मैं भी तुम्हारी तरह आत्मा हूं और चेतन हूं, तुम भले ही मुझसे बहुत बड़े 'वरेण्य' होओ, तो मैं सखा बनकर तुम्हें 'वरेण्य सखा' नाम से सम्बोधित करता हूं। हे प्रभो! तुम मुझे पुत्र मानो, बन्धु या सखा मानो, कुछ मानो, हर तरह मैं तेरा हूं और तुम मेरे हो। हे मेरे! तो मुझ अपने को तुम कैसे छोड़ सकते हो? मैं अपूर्ण अशक्त बालक तेरा हूं, इसलिए मेरी सहायता किये बिना तुम कैसे रह सकते है? तुम परिपूर्ण हो, तुम्हें सदा मुझे देते रहनं के सिवा और कार्य ही क्या है? यही मेरे लिए तुम्हारा यजन है- तुम मुझे देते रहो और मैं लेता रहूं यही तुम्हारी ओर से मेरा यजन है। तुमसे मेरा सम्बन्ध इसी रूप में स्थिर है। बड़ा छोटे को दिया ही करता है, इसलिए मैं क्या मांगूं? मेरी आवश्यकता को समझना और पूरी तरह पूर्ण करना; तुम स्वयं ही करोगे। हे मेरे देव! तुम स्वयं ही करोगे। बस, मैं तेरा हूं और क्या कहूं! हे मेरे सर्वस्व! हे मेरे सब-कुछ! मैं तेरा हूं।

साभार-वैदिक विनय

वैदिक विनय

वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित करें।

- विजय आर्य
मो. 09540040339

सम्पादकीय

कश्मीर का सच!

कश्मीर के बारे में बहुत पहले मैंने एक छोटा सा वृत्तांत सुना था कि कश्मीर मुद्दे पर संयुक्त राष्ट्र संघ में भारत पाकिस्तान के विदेश सचिव स्तर की बात हो रही थी। पाकिस्तान कश्मीर पर अपना दावा जता रहा था कि कश्मीर हमेशा से हमारा हिस्सा है तब भारतीय सचिव ने कहा श्रीमान् मैं कश्मीर पर अपना दावा जताने से पहले एक कथा सुनाना चाहता हूं कि 'एक बार कश्यप ऋषि टहलते हुए डल झील पर पहुंचे। डल झील के स्वच्छ निर्मल जल में उनकी नहाने की इच्छा हुई तो उन्होंने वस्त्र आदि किनारे रख ज्यों ही डुबकी लगायी एक पाकिस्तानी उनके वस्त्र उठाकर भाग गया।' यह सुनते ही पाकिस्तानी सचिव ने कहा जनाब क्या बात कर रहे हैं! कश्यप ऋषि ने तो कश्मीर बसाया था और पाकिस्तान अब बना तो इस पर भारतीय सचिव ने कहा यही हम बताना चाहते हैं कि कश्मीर भारत का हिस्सा है।

यह कथन सत्य है या असत्य यह बात मायने नहीं रखतीं; मायने रखता है पाकिस्तान के द्वारा बार-बार यह कहा जाना कि कश्मीर की मुस्लिम बहुल आबादी पाकिस्तान में मिलना चाहती है। कल शायद पाकिस्तान यह भी कह सकता है कि केरल की मुस्लिम आबादी भी पाक से मिलना चाहती है, परसों यह भी कह सकता है कि पश्चिमी उत्तर प्रदेश का मुस्लिम भी पाकिस्तान से मिलना चाह रहा है; यह मैं नहीं कह रहा पिछले जुम्मे की नमाज के बाद उत्तर प्रदेश में पाक सर्मथकों द्वारा पाकिस्तानी झंडे फहराये जाना इसका प्रमाण है।

मैं भारतीय मुस्लिम मंशा पर प्रश्न चिह्न खड़ा नहीं कर रहा हूं। मेरा प्रश्न चंद गद्दार और पाकिस्तान की मंशा पर है। आज तीव्र बढ़ती मुस्लिम आबादी पर पूरे विश्व के चितंक विचार कर रहे हैं पर भारतीय चितंक इस मामले पर रहस्य की चादर ओढ़े बैठे हैं। हालांकि अब भारत की विदेश नीति अतीत की विदेश नीति से भिन्न है किन्तु यदि हाल यही रहा तो आने वाले समय में भारत के अन्दर दस और कश्मीर तैयार हो चुके होंगे। आज से 400 साल पहले कश्मीर हिन्दू बहुल राज्य था किन्तु 1990 के दशक के बाद मुस्लिम आबादी वाला क्षेत्र बनकर रह गया। आने वाले समय में जहां भी मुस्लिम आबादी बढ़ती रहेगी वह हिस्सा कश्मीर बनता जायेगा क्योंकि जैसे आज पाकिस्तान के रहनुमा कश्मीर में हुरियत के नाम से रह रहे हैं। ओवेशी जैसे लोग खुले मंच से पाकिस्तान का पक्ष लेते हैं। बुखारी का यह कहा जाना कि ''मैं आई एस आई का सबसे बड़ा एजेंट हूँ। भारत सरकार में यदि हिम्मत है तो मुझे पकड़ कर दिखाये!'' अपने देश के प्रधानमंत्री को नजरअंदाज कर अपने बेटे की दस्तारबंदी जिमाने में पाकिस्तान के वजीरेआला जनाब नवाज शरीफ को निमंत्रण भेजा जाना यह बातें साबित करती हैं कि इन लोगों का तन भले ही हो पर मन सीमापार पड़ा है और यह देश का दुर्भाग्य है कि इन दुश्मनों को भारत सरकार अपने देश में क्यों पलने दे रही है ? भारत सरकार को हुरियत नेताओं से पूछ लेना चाहिये कि आपको इस देश में रहना है कि नहीं। आप हमारे साथ हैं या पाकिस्तान के साथ? पाकिस्तान जब भी वार्ता की मेज पर आता है तो वह बिना हुरियत नेताओं के क्यों नहीं आता यह भी भारत सरकार के लिए सोचनीय विषय है। यद्धपि राजनैतिक बयानबाजी आर्य समाज का काम नहीं है किन्तु राष्ट्रहित से जुड़े मुद्दों पर हमारी आत्मा खामोश नहीं बैठती, मन का दर्द शब्दों में उतर आता है। खैर फौज के दबाव के कारण पाकिस्तानी सरकार वार्ता की मेज पर नहीं आयी अब भारत सरकार को पाकिस्तान से पूछ लेना चाहिये कि आगे की बात फौज से करे, आतंकवादियों से करे या पाक हुक्मरानों से करे या फिर कश्मीर के साथ भारत में रह रहे 18 करोड़ मुस्लिमों को पाकिस्तान को देकर?

-सम्पादक

बोध कथा

जब अन्तः करण शुद्ध हुआ

मथुरा में बाल-ब्रह्मचारी तेज से भरपूर स्वामी दयानन्द पाखण्ड के दुर्गों को गिराये जाते थे। प्रतिदिन शास्त्रार्थ होते थे। प्रतिदिन उनके विरोधी हारते थे। दाँत पीसते थे वे कि यह साधु कल मथुरा में ही पढ़कर गया था, आज हमारी ही पोल खोले देता है। हमारी आजीविका छीने लेता है। शास्त्रार्थ में हमसे हारता नहीं। इसे हराने के लिए कोई और उपाय करना चाहिए। उपाय सोचा गया। एक वेश्या के पास गये वे लोग। सुन्दर थी वह। उससे बोले- 'हम तुझे बहुत से आभूषण देंगे। अमुक उद्यान में दयानन्द रहता है। तू उसके पास जा। उसके पास जाकर कोलाहल मचा देना कि इसने मुझे छेड़ा है। हम निकट ही छिपे रहेंगे। बाहर निकल डण्डे से उसे अधमरा कर देंगे। उसे मथुरा से बाहर निकाल देंगे। बाहर निकल जाने पर तुम्हें और रुपया देंगे।'

वेश्या न वह बात मान ली। अपने-आपको खूब सजाकर, कितने ही आभूषण धारण करके वहां गई, जहां ब्रह्मचर्य और आत्मा के तेज से चमकते हुए स्वामी दयानन्द बैठे थे-एक वृक्ष के नीचे आंखें मूंदकर, ध्यान में मग्न। वेश्या ने उनको दूर से देखा तो ऐसा प्रतीत हुआ जैसे आधे पाप धुल गए हैं। निकट गई तो शेष आधे भी धुल गये और निकट जाने पर अन्तःकरण भी पवित्र हो गया। एक चीख उसके मुख से निकल गई। तभी बाल-ब्रह्मचारी ने आंखें खोल दीं और बोले, 'मां! तुम कौन हो?'

मां का शब्द सुनते ही उसका हृदय भर आया। आंखें डबडबा आईं। अश्रु-भरी आंखों से उसकी ओर देखकर अपने आभूषण उतारने लगी। महर्षि ने फिर कहा-'मां! तुम कौन हो? अपने बेटे से क्या लेने आई हो तुम?'

स्त्री ने सिसकते हुए कहा-'क्षमा मांगने आई हूं महात्मा! इन आभूषणों ने मुझे अन्धा कर दिया था। इनकी मुझे आवश्यकता नहीं।' और रोते हुए उसने सारी कहानी महर्षि को सुना दी। महर्षि ने गम्भीरता से कहा-'मां, ईश्वर ने जो श्रेष्ठ बुद्धि इस समय दी है, वह सदा बनी रहे, यही मेरा आशीर्वाद है।'

इस स्त्री के पाप-भरे मन को बदला तो किस वस्तु ने?

महर्षि की पवित्र आत्मा की शक्ति ने। आत्मा की शक्ति जिनके अन्दर जाग उठती है, उनके समक्ष ऐटम बमों और हाईड्रोजन बमों की शक्ति भी हार जाती है।

साभार-बोध कथाएं

पृष्ठ 1 का शेष

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य ...

-: कार्यक्रम :-

25 तथा 26 नवम्बर 2015	सिडनी भ्रमण	(2 रात्रि)
27, 28 तथा 29 नवम्बर 2015	आर्य महासम्मेलन	(3 रात्रि)
30 नवम्बर 2015	सिडनी भ्रमण	(1 रात्रि)
01 दिसम्बर 2015	भारत के लिये वापसी	

यात्रा व्यय रु. 1,40,000/- एक लाख चालीस हजार प्रति यात्री

सम्मेलन की रजिस्ट्रेशन फीस हेतु 100 आस्ट्रेलियन डालर प्रति यात्री, यात्रा से पूर्व अलग से नकद देने होंगे।

यात्रा नं. 2

भव्य आस्ट्रेलिया यात्रा (12 रात्रि 13 दिन) ● 24 नवम्बर से 07 दिसम्बर 2015 तक

प्रस्थान : दिनांक 24 नवम्बर 2015 को दोपहर 13.15 बजे दिल्ली से सिडनी के लिये

वापसी : दिनांक 07 दिसम्बर 2015 भारत के लिये वापसी सुबह 09:45 बजे मैलबर्न से

-: कार्यक्रम :-

25 तथा 26 नवम्बर 2015	सिडनी भ्रमण	(2 रात्रि)
27, 28, तथा 29 नवम्बर 2015	आर्य महासम्मेलन	(3 रात्रि)
30 नवम्बर 2015	सिडनी भ्रमण	(1 रात्रि)
01 दिसम्बर से 04 दिसम्बर तक	गोल्ड कोस्ट भ्रमण	(4 रात्रि)
05 दिसम्बर से 06 दिसम्बर तक	मैलबर्न भ्रमण	(2 रात्रि)
07 दिसम्बर 2015 को	भारत के लिए वापसी	

यात्रा व्यय रु. 2,35,000/- दो लाख पैंतीस हजार प्रति यात्री

सम्मेलन की रजिस्ट्रेशन फीस हेतु 100 आस्ट्रेलियन डालर प्रति यात्री, यात्रा से पूर्व अलग से नकद देने होंगे।

उक्त दोनों यात्राओं की यात्रा-व्यय राशि में हवाई जहाज की सभी अंतर्राष्ट्रीय टिकटें तथा अंतर्देशीय टिकटें (दिल्ली से सिडनी, सिडनी से गोल्ड कोस्ट, गोल्डकोस्ट से मैलबर्न तथा मैलबर्न से भारत) वीजा, इन्श्योरेन्स (70 वर्ष तक की आयु के यात्रियों के लिये) सभी स्थानों पर आने-जाने की वाहन व्यवस्था, नाश्ता, दोनों समय का भोजन, होटल व्यय, सभी स्थानों के प्रवेश टिकट, मिनरल वाटर, टिप्स आदि के सभी खर्चे शामिल हैं। इसलिये निवेदन है कि यदि आप इस यात्रा में जाना चाहते हों तो कृपया इस पत्र के प्राप्त होते ही निम्नलिखित राशियां **LE PASSAGE TO INDIA TOURS & TRAVELS PVT LTD के नाम बैंक ड्राफ्ट बनवाकर (Payable At Ahmedabad) नीचे लिखे पते पर श्री अग्रवाल सुरेश चन्द्र आर्य को भेजने का कष्ट करें।**

यात्रा नं. 1 के लिये रु. 80,000/- दिनांक 31 अगस्त 2015 से पूर्व

यात्रा नं. 2 के लिये रु. 1,40,000/' दिनांक 31 अगस्त 2015 से पूर्व

दोनों यात्राओं की शेष राशि 30 सितम्बर 2015 से पूर्व सभी यात्रियों को अवश्य भेज देनी है। सभी **बैंक ड्राफ्ट LE PASSAGE TO INDIA TOURS & TRAVELS PVT LTD** के नाम बनवाकर **(Payable At Ahmedabad)** निम्न पते पर भेज दें:-

अग्रवाल सुरेश चन्द्र आर्य
यात्रा संयोजक - अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन -2015
12, रॉयल क्रीसैन्ट, थलतेज, अहमदाबाद-380059,
मो. 09824072509 निवास : 079-26858338
ई-मेल आई.डी. **scba66@gmail.com**

नोट : हमने केवल 30 सीटें यात्रा नं. 1 के लिये तथा 30 सीटें यात्रा नं. 2 के लिये आरक्षित कराई हैं। अत: जिन 30 यात्रियों के आवेदन-पत्र सबसे पहले प्राप्त होंगे उन्हें ही यात्रा में ले जाना सम्भव हो पायेगा। बाद में आने वाले आवेदन-पत्रों के यात्रियों को यात्रा-व्यय कुछ अधिक देना पड़ सकता है। हमने 5 रात्रि का न्यूजीलैण्ड भ्रमण का कार्यक्रम भी बनाया था किन्तु रु. 85,000/- प्रति यात्री का अतिरिक्त खर्च आने के कारण न्यूजीलैण्ड का भ्रमण स्थगित किया है।

कुछ आवश्यक सूचनाएं

1. सभी यात्रियों को यात्रा की व्यय राशि के ड्राफ्ट के साथ पासपोर्ट के प्रथम दो पृष्ठ तथा अन्तिम दो पृष्ठों की जेरोक्स कॉपी अवश्य भेजनी है। संलग्न आवेदन पत्र पर सम्बन्धित आर्य समाज के पदाधिकारियों की अनुमति/स्वीकृति आवश्यक है। एडवांस राशि प्राप्त होने के बाद **LE PASSAGE TO INDIA TOURS & TRAVELS PVT LTD** द्वारा आपको वीजा सम्बन्धी तथा अन्य सभी सूचनाएं भेज दी जायेंगी।

2. सार्वदेशिक सभा द्वारा इस यात्रा हेतु 4 सदस्यों की एक समिति गठित की गई है जिसके संयोजक श्री अग्रवाल सुरेश चन्द्र आर्य,उप प्रधान-सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा हैं। अन्य सदस्य श्री प्रकाशजी आर्य- मंत्री, सार्वदेशिक सभा, श्री धर्मपालजी आर्य- प्रधान, दिल्ली सभा तथा श्री विनय आर्य- महामंत्री दिल्ली सभा हैं।

3. यात्रा खर्च में 70 वर्ष तक के यात्रियों का बीमा खर्च शामिल है। 70 वर्ष से अधिक आयु वाले यात्रियों को अतिरिक्त बीमा खर्च ट्रेवल कं. को देना होगा अथवा उन्हें अपना बीमा स्वयं कराना होगा।

4. यह यात्रा अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त **LE PASSAGE TO INDIA TOURS & TRAVELS PVT LTD** द्वारा आयोजित की गई हैं। हमें पूर्ण विश्वास है कि आपकी यह यात्रा अत्यन्त सुखद, आरामदायक एवं रोमांचक रहेगी।

5. 2 वर्ष तक के बालकों (INFANT) को साथ में ले जाने पर रु. 25,000/- प्रति बालक अतिरिक्त देना होगा।

2 वर्ष से अधिक तथा 12 वर्ष तक की उम्र के बच्चों (CHILD) के लिये निम्न प्रकार अतिरिक्त राशि प्रति बच्चा देनी होगी-

बिस्तर के साथ कुल यात्रा व्यय का 80 % ● बिस्तर के बिना कुल यात्रा व्यय का 65 %

6. याद रहे कि इस यात्रा के लिए आपके पासपोर्ट की वैधता (Validity) 31 मई 2016 तक होनी आवश्यक है।

यात्रा कैन्सिल कराये जाने पर कैन्सीलेशन चार्जेज निम्न प्रकार लागू होंगे :-

कटौती	विवरण
1. कुछ नहीं	यात्रा की प्रस्थान तिथि से 71 वें दिन अथवा उससे पूर्व कैन्सिल कराने पर (यदि वीजा तब तक न मिला हो)
2. रु. 15,000/-	यात्रा की प्रस्थान तिथि से 71वें दिन अथवा उससे पूर्व कैन्सिल कराने पर (यदि वीजा मिल चुका हो तो)
3. रु. 20,000/-	यात्रा की प्रस्थान तिथि से 70 से 60 दिन के अन्दर कैन्सिल कराने पर
4. रु. 30,000/-	यात्रा की प्रस्थान तिथि से 59 से 31 दिन के अन्दर कैन्सिल कराने पर
5. रु. 100प्रतिशत	यात्रा की प्रस्थान तिथि से 30 से 01 दिन के अन्दर कैन्सिल कराने पर
6. रु. 20,000/-	यदि यात्री को वीजा नहीं मिलता है।

कृपया उपरोक्त सभी बातों को ध्यान में रखकर ही आवेदन पत्र व राशि भेजें ताकि बाद में अकारण कोई विवाद न हो। यात्रा सम्बन्धी अन्य जानकारी हेतु आप मुझसे तथा निम्नलिखित महानुभावों से सम्पर्क कर सकते हैं:

श्री अग्रवाल सुरेश चन्द्र आर्य मो. 098240 72509

यात्रा नं. 3. उपरोक्त 2 यात्राओं के अतिरिक्त 5 रात्रि और 6 दिन की न्यूजीलैण्ड यात्रा का आयोजन भी किया गया है जिसका अतिरिक्त व्यय रु. 85,000 हजार प्रति यात्री देय होगा। जो यात्री न्यूजीलैण्ड की यात्रा पर जाना चाहें वे रु. 1,75,000 की राशि एडवांस भेजें अन्य सभी बातें यथावत् रहेगीं।

एक अद्वितीय अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2015 तथा अविस्मरणीय अस्ट्रेलिया महाद्वीप और न्यूजीलैण्ड की सुखद यात्रा की आशा और विश्वास के साथ

- प्रकाश आर्य, मो. 09826655117

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2015 हेतु आवेदन - पत्र

श्री अग्रवाल सुरेश चन्द्र आर्य, मो. 098240 72509, दूरभाष : 079-26858338
यात्रा संयोजक-अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन-2015
12, रॉयल क्रीसैन्ट, थलतेज, अहमदाबाद-380059

महोदय,

मैं अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2015 में भाग लेने जाना चाहता हूं/चाहती हूं। इस संबंध में आपके द्वारा प्रेषित जानकारी को मैंने अच्छी तरह पढ़ लिया है तथा उसमें दी गई सभी बातें मुझे स्वीकार हैं। मेरी अन्य जानकारी निम्न प्रकार है:

नाम :.....पिता/पति का नाम :.....
आयु :..... जन्म दिनांक : .....व्यवसाय :.....
स्थाई पता :.....
टेलीफोन व मोबाईल नम्बर : .....ई.मेल :.....
मैं आर्य समाज : .....का/की सदस्य हूं।
मेरा पासपोर्ट :.....तक के लिए वैध है।
मेरा पासपोर्ट नम्बर : .....है।

यात्रा नं. 1

मैं यात्रा नं. 1 में शामिल होना चाहता/चाहती हूं। मैं इस यात्रा की प्रथम किश्त की राशि रु. 80,000/- का बैंक ड्राफ्ट साथ में भेज रहा हूं/रही हूं। कृपया मुझे शीघ्र ही वीजा फार्म तथा अन्य जानकारी भेज दें।

यात्रा नं. 2

मैं यात्रा नं. 2 में शामिल होना चाहता/चाहती हूं। मैं इस यात्रा की प्रथम किश्त की राशि रु. 1,40,000/- का बैंक ड्राफ्ट साथ में भेज रहा हूं/रही हूं। कृपया मुझे शीघ्र ही वीजा फार्म तथा अन्य जानकारी भेज दें।

मेरे द्वारा दी गई उपरोक्त जानकारी पूर्ण रूप से सत्य है।

आर्य समाज की अनुमति (रबर स्टाम्प के साथ) **भवदीय/भवदीया**

दिनांक : _____ **(आवेदक के हस्ताक्षर)**

आवेदन पत्र हमारी बेवसाइट

www.thearyasamaj.org/download से भी डाउनलोड कर सकते हैं। शीघ्र आवेदन करें। स्थान सीमित है।

पर्यावरण के लिए उपयोगी गाय का गोबर

गाय की रक्षा आज चिंता का गंभीर विषय बना हुआ है। हम लोगों ने घरों में गायों को पालना छोड़ दिया है, जो पाल रहे हैं वे भी उन्हीं गायों को पाल रहे हैं जो दूध देती हैं। जैसे ही गाय दूध देना बंद करती है। गाय पालक उससे पीछा छुड़ाने के लिए उसे भटकने के लिए छोड़ देता है। जिससे वह या तो सड़क पर किसी गाड़ी के नीचे आकर मर जाती है या फिर भूख के कारण उसके प्राण निकल जाते हैं। यदि किसी व्यक्ति के दिल में दया होती है तो वह उस गाय को ज्यादा से ज्यादा उसे गौशाला में छोड़ देता है।

आखिर कब तक चलेगा ये सब। हम हिन्दू लोग गाय को अपनी माता मानते हैं और हम ही उसकी अनदेखी कर रहे हैं। वे सभी मूर्ख हैं

जो आज गाय की अनदेखी कर रहे हैं। अगर सोचा जाए तो इस विश्व में कौन सी ऐसी समस्या है जिसका कोई हल नहीं निकल सकता। आज बड़े-बड़े शहरों में रहने वाले वीआईपी लोग कहते हैं कि हम गाय को बांधे कहां और उसके लिए चारा कहां से जुटाएं यह कहकर आसानी से अपना पल्ला झाड़ लेते हैं और गांव में जो लोग निवास करते हैं वे लोग गाय को तभी तब अपने घर में रखते हैं जब तक वह दूध देती है। उसके बाद उसे दर-दर की ठोकरें खाने के लिए छोड़ दिया जाता है, सिर्फ इसलिए कि वह अब हमें दूध नहीं देगी। अभी तो गाय सिर्फ खाएगी और गोबर करेगी। उनको ये नहीं पता कि भाई गाय के अनेक फायदें हैं। गाय के गोबर का इस्तेमाल खाद के साथ-साथ हवन-यज्ञ आदि में भी अधिक मात्रा में हो रहा है, जिसकी बहुत अधिक मांग है। गाय के गोबर से निर्मित कन्डे का हवन लकड़ियों की जगह बहुत अधिक इस्तेमाल हो रहा है। एक तो हमें यज्ञ के लिए लकड़ियों हेतु पेड़ नहीं काटने पड़ेंगे और गाय के कण्डों का धुआं वातावरण को शुद्ध करता है, जिससे गौ पालकों की गाय के प्रति श्रद्धा और बढ़ेगी।

आर्य बन्धुओं से अपील

सभी आर्य बंधुओं से अपील है कि गौ पालन में सहयोग करें। जो यह कर पाने में असमर्थ हैं वे गाय के गोबर से बने कंडों को हवन आदि में इस्तेमाल जरूर करें ताकि गौशाला में पल रही गौओं के लिए चारा आदि आसानी से जुटाया जा सकें साथ ही पर्यावरण संतुलन में भी सहयोग हो सकेगा। गाय के गोबर के कण्डे (उपले) प्राप्त करने के लिए सम्पर्क करें-

-दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली, श्री विजय आर्य, मो. 09540040339

आर्यजन कृपया ध्यान दें

एम.डी.एच. वेद प्रचार वाहन की सेवाओं का लाभ उठाएं

सभी समाजों के अधिकारियों से सानुरोध प्रार्थना करते हुए विशेष सूचना दी जा रही है कि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा जो प्रचार वाहन चलाया जा रहा है उसमें बहुत अच्छा भजनीक है जो अपने साथियों के साथ सुन्दर भजन व प्रचार का कार्य कर रहा है। आप इनको वाहन सहित या जिस आर्य समाज मन्दिर के आगे वाहन खड़ा करने की जगह न हो तो भी भजनीक को बुला सकते हैं। वाहन में वैदिक साहित्य प्रचार सामग्री भी उपलब्ध रहेगी। इस वाहन पर होने वाला खर्चा जैसे भजनीक, वादक व वाहन चालक तथा सहायक सभी का खर्चा व वेतन आपकी दि.आ.प्र.सभा द्वारा व्यय किया जाता है। यदि आप इसका लाभ उठायें जिससे प्रचार कार्य सरलता पूर्वक बढ़ता रहे, जिसकी समाज को अपेक्षा है।

सम्पर्क करें- एस.पी. सिंह मो. 9540040324

आर्य समाज हौज़ खास के तत्त्वावधान में

श्रावणी पर्व उत्सव एवं वेद प्रचार सप्ताह का आयोजन

आर्य समाज हौज़ खास के तत्त्वावधान में दिनांक 6 से 12 सितम्बर 2015 तक श्रावणी पर्व एवं वेद प्रचार सप्ताह का आयोजन किया जा रहा है।

निवेदक- प्रधान एवं सभी पदाधिकारीगण, मंत्री मो 09811675204

अर्जुन देव चड्ढ़ा के सेवा कार्यों पर

''समाज सेवा की अर्द्धशताब्दी'' स्मारिका का विमोचन

नोबेल पुरस्कार से सम्मानित श्री कैलाश सत्यार्थी ने कोटा के प्रसिद्ध समाज सेवी अर्जुन देव चड्ढ़ा के सेवा कार्यों पर प्रकाशित ''समाज सेवा की अर्द्धशताब्दी'' स्मारिका के विमोचन के अवसर पर कहा 'श्री चड्ढ़ा बहुआयामी व्यक्तित्व के होने के साथ समाज सेवी के पर्याय बन गये हैं, जिन्होंने समाज सेवा के लिए अपने जीवन के 50 वर्ष समर्पित कर दिये। इनके द्वारा किये गये कार्य न सिर्फ अनुकरणीय हैं वरन् नई पीढ़ी व सामाजिक सेवा में लगे लोगों के लए प्रेरणास्पद हैं, श्री चड्ढ़ा अपने आप में एक संस्था हैं।'

बचपन बचाओ आंदोलन के प्रणेता श्री कैलाश सत्यार्थी ने नई दिल्ली कालकाजी स्थित अपने कार्यालय पर स्मारिका के विमोचन के अवसर पर कहा कि 'हमने मिलकर सतीप्रथा, बन्धुआ मुक्ति तथा बचपन बचाओ आदि सामाजिक मुद्दों पर एक साथ काम किया है।' इस अवसर पर कैलाश सत्यार्थी के कार्यालय में अर्जुनदेव चड्ढ़ा के साथ कोटा के आर्य विद्वान राम प्रसाद याज्ञिक, वेद प्रचार समिति कोटा के अध्यक्ष श्री अरविन्द पाण्डेय, आर्य समाज विज्ञान नगर के श्री मुकेश चड्ढा और श्री विनय आर्य महामंत्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं श्री अजय सहगल ट्रस्टी महर्षि दयानंद स्मारक ट्रस्ट टंकारा उपस्थित थे।

-अरविन्द पाण्डेय

आर्य समाज कीर्तिनगर के तत्त्वावधान में

श्रावणी उपाकर्म एवं श्री कृष्ण जन्माष्टमी पर्व

आर्य समाज कीर्तिनगर, नई दिल्ली के तत्त्वावधान में दिनांक 3 से 13 सितम्बर 2015 को श्रवणी उपाकर्म एवं श्री कृष्ण जन्माष्टमी पर्व का आयोजन किया जा रहा है। जिसके अन्तर्गत अथर्ववेदीय यज्ञ व महिला सम्मेलन का आयोजन किया जाएगा।

निवेदक :

ओम प्रकाश आर्य, प्रधान, श्री सतीश चड्डा, मंत्री

आर्य समाज राजगांव जिला रायगढ़ द्वारा सिलाई केन्द्र की स्थापना

आर्य समाज राजगांव जिला रायगढ़ द्वारा दिनांक 1 जुलाई 2015 को सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र का शुभारम्भ हुआ। कार्यक्रम का उद्घाटन आचार्य दया सागर जी पूर्व प्रधान छतीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, रामपुर के कर कमलों द्वारा किया गया। अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ, आर्य समाज रानीबाग एवं आर्य समाज साकेत, नई दिल्ली के सहयोग से सिलाई केन्द्र का शुभारम्भ हुआ। सिलाई केन्द्र की स्थापना में श्री जीवर्धन शास्त्री व आचार्य दयासागर जी का विशेष योगदान रहा। इस अवसर पर श्री प्रहलाद आर्य, श्री राजेन्द्र आर्य, टेवाराम आर्य, श्री अमीराम आर्य, श्री दौलत राम पैकरा, श्री पूर्णोराम आर्य एवं अनेक महिलाओं की गरिमामयी उपस्थित रही।

-प्रधान, आर्य समाज, राजगांव

आनन्दधाम (गढ़ी आश्रम) ऊधमपुर जम्मू के तत्त्वावधान में

योग-ध्यान, साधना शिविर

आनन्दधाम (गढ़ी आश्रम) ऊधमपुर, जम्मू में आश्रम के मुख्य संरक्षक एवं निदेशक पूज्य महात्मा चैतन्यमुनि के सान्निध्य में दिनांक 27 सितम्बर से 4 अक्टूबर 2015 तक नि:शुल्क योग-ध्यान-साधना शिविर का आयोजन किया जा रहा है। शिविर में साधक अपनी शंकाओं का समाधान भी कर सकेंगे। इच्छुक साधक अपना स्थान आरक्षित करने के लिए फोन नं. 09419107788, 09419198451 पर सम्पर्क करें।

-भारत भूषण आनन्द, आश्रम प्रधान

ग्रन्थ परिचय

संस्कार विधि

प्रश्न : 1. मनुष्यों के शरीर और आत्मा को सुसंस्कृत करने के लिए महर्षि दयानन्द ने कौन-से ग्रन्थ की रचना की? (अथवा जिस ग्रन्थ की रचना की उसका नाम क्या है?)
उत्तर : संस्कार विधि।
प्रश्न : 2. संस्कार विधि में कितने संस्कारों का विधान है?
उत्तर : 16 संस्कारों का।
प्रश्न : 3. सबसे पहला और सबसे अन्तिम संस्कार कौन सा है?
उत्तर : सबसे पहला संस्कार 'गर्भाधान संस्कार' है जो बच्चे के जन्म से पहले किया जाता है। वस्तुत: शरीर का आरम्भ गर्भाधान से ही हो जाता है। सबसे अन्तिम संस्कार 'अन्त्येष्टि संस्कार' है, जो शरीर के मृत होने पर उसको भस्म करने के लिए किया जाता है।
प्रश्न : 4. बच्चे के जन्म लेने से पूर्व कितने और कौन-कौन से संस्कार किये जाते हैं?
उत्तर : बच्चे के जन्म से पूर्व तीन संस्कार किये जाते हैं, जिनका नाम क्रमश: 1. गर्भाधान संस्कार, 2. पुसवन संस्कार, 3. सीमन्तोन्नयन संस्कार है।
प्रश्न : 5. जन्म लेने के पश्चात् विवाह पर्यन्त किन-किन संस्कारों का विधान है?
उत्तर : बच्चे के जन्म लेते ही उसका मल आदि पोंछ, स्नान कराने के पश्चात् 4. जातकर्म संस्कार, तत्पश्चात् क्रमश: 5. नामकरण, 6. निष्क्रमण, 7. अन्नप्राशन, 8. चूड़ाकर्म, 9. कर्णवेध, 10, उपनयन, 11, वेदारम्भ और 12, समावर्त्तन संस्कारों का विधान है। इसके पश्चात्, 13. विवाह संस्कार का नम्बर आता है, जो तेरहवां संस्कार है। इस प्रकार, जन्म के पश्चात् विवाह तक दस संस्कारों का विधान किया गया है।

प्रश्न : 6. विवाह संस्कार के पश्चात् कौन से संस्कार शेष बचते हैं?
उत्तर : विवाह संस्कार के पश्चात् क्रमश: 14. वानप्रस्थ, 15. संन्यास और 16. अन्त्येष्टि संस्कार शेष बचते हैं।
प्रश्न : 7. संस्कार विधि में बहुत लम्बा प्रकरण 'गृहाश्रमप्रकरणम्' दिया गया है। आपने तो उसका नामोल्लेख भी नहीं किया, क्यों?
उत्तर : यहां संस्कारों की बात चल रही है, जबकि 'गृहाश्रमप्रकरण' वस्तुत: विवाह संस्कार का एक भाग है, पृथक् संस्कार नहीं। विवाह करने के पश्चात् जब युवक और युवती गृहस्थ आश्रम में प्रविष्ट हो जाते हैं, तो अपनी सामर्थ्य के अनुसार परोपकार करना, नियत समय पर यथाविधि ईश्वर की उपासना, आदि पंचयज्ञ (ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ, पितृयज्ञ, बलिवैश्व देव यज्ञ और अतिथि यज्ञ) करना उनका कर्त्तव्य बन जाता है। इन सबका विधान गृहाश्रम प्रकरण में किया गया है। अत: हमने इसका अलग से नामोल्लेख नहीं किया।
प्रश्न : 8. इन सोलह संस्कारों का मुख्य उद्देश्य एवं लाभ क्या है?
उत्तर : इन सोलह संस्कारों को विधि पूर्वक करने एवं तदनुसार जीवन यापन करने से शरीर और आत्मा सुसंस्कृत बनते हैं, जिससे मनुष्य जीवन के मुख्य चार पुरुषार्थों -धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति हो सकती है। इनके करने से सन्तानें अत्यन्त योग्य बनती हैं।
प्रश्न : 9. क्या सोलह संस्कारों के अतिरिक्त संस्कार विधि में कुछ अन्य विषय भी मिलता है?
उत्तर : मुख्य रूप से 'सामान्य प्रकरण' का वर्णन इन सोलह संस्कारों के अतिरिक्त है। वास्तव में, यह प्रकरण भी संस्कारों का एक अभिन्न अंग है, जिसके बिना संस्कार की क्रियाविधि पूर्ण नहीं होती। वैसे संस्कारों के अतिरिक्त जो हम सामान्य यज्ञ करते हैं, वह इस सामान्य प्रकरण के द्वारा ही करते हैं।
प्रश्न : 10. संस्कार विधि में अध्यायों का विभाजन किस नाम से किया गया है?
उत्तर : संस्कार विधि में 'प्रकरण' नाम से अध्यायों का विभाजन किया गया है।
प्रश्न : 11. इस संस्कार विधि की रचना सत्यार्थ प्रकाश से पहले की गई या बाद में?
उत्तर : इसकी रचना महर्षि ने सत्यार्थ प्रकाश के पश्चात् ही विक्रमी संवत् 1932, कार्तिक मास के कृष्ण पक्ष 30, अमावस्या को शनिवार के दिन प्रारम्भ की थी और संवत् 1932, पौष शुक्ल कृष्ण पक्ष 7, सोमवार के दिन इसका लेखन समाप्त हुआ। संवत् 1933 के अन्त में, बम्बई 'एशियाटिक प्रेस' से छप कर यह प्रकाशित हो गया था। इसका दूसरा संस्करण कुछ सुधार व संशोधन के साथ विक्रमी संवत् 1940, आषाढ़ बदी 13 तिथि, कृष्ण पक्ष रविवार क दिन पुन: छपाने का विचार महर्षि द्वारा किया गया और संशोधन के साथ इसकी समाप्ति विक्रमी संवत् 1940, भादपद्र मास, कृष्ण पक्ष, अमावस्या को होकर पाण्डुलिपि तैयार हो चुकी थी।
प्रश्न : 12. इस ग्रन्थ की रचना किस भाषा में की गई है?
उत्तर : इस ग्रन्थ में मन्त्र संस्कृत भाषा में तथा अन्य निर्देश व विधि आदि हिन्दी भाषा में है।
साभार : महर्षि दयानन्द ग्रन्थ परिचय

महर्षि दयानन्द ग्रन्थ परिचय (प्रश्नोत्तरी) वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित करें।
- विजय आर्य, मो. 09540040339

Glimpses of the Rig Veda

The Creator of Cosmic Sacrifice

The first incantation of Rig Veda and the first grateful offering of the earliest seer is Agnimile':
I am saluting the foremost manifestation of the Creation. Surely, Agni is the Supreme Sacrificer, the high priest and the exponent of the great collective process of the Universe. He imparts movement as well as consciousness, hence he is known as 'Agni', the leading light. I reverentially perceive the magnificent pageant of the sustaining forces he has commanded for my enlightenment and blissful living. He has activated all his splendid bounties to be a part of the Universal sacrifice.
O Resplendent Lord, you feed and sustain all that is divine and luminous. You protect the unrestrained cosmic sacrifices of the Creation and modulate all the rules of creative forces. You have gifted all enjoyments for the living beings, while you yourself remain ever selfless and withdrawn. O leader of human generation and Nature's heavenly bounties, Your Universe appears as a mysterious home; being pro-active, it is thoroughly balanced and full.
Lord, do light up my inner self for the manifestation of divinity. Lead me on the path of this great offering and bestow the splendor on this institutor of worship.

अग्निमीले पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्।
होतारं रत्नधातमम्।। *(Rv I.1.1.)*
Agnim Ile purohitam yajhasya davam rtvijam. hotaram ratnadhatamam.

God is One in spite of Various Names

God, verily, is One. Endless are His attributes and hence countless are His names. To this Divine Being, man offers invocation through the various words of the Vedic Texts. He appears as 'Indra', the most resplendent; 'Mitra', the most benevolent, 'Varuna', the most venerable; 'Agni', the most celestial, well-winged 'Garutman'; 'Divya', the most divine; 'Yama', the law-abider. He is also the cosmic breath called 'Matarisvan'. The Vedic verses identify him as 'Ekam Sat', that is, the One and the only Lord of the Universe who creates, sustains and annihilates.
Those who are unaware of the language of the Vedas think that the Vedic seers used to worship various Gods and imaginary deities residing in heaven. But the enlightened people with finer knowledge thoroughly analyse the Creation and recodnize the many attributes of the one and only Creator and address Him by various names.
The Lord alone is sustaining the Cosmos; fanning, aspiring and inspiring. In His supremacy over the Universe, He is the One and the One alone. There is no second or third or fourth to replace Him. All the bounties of Nature emerge from Him and also converge in Him to become One and Only One.

इन्द्रं मित्रं वरुणमग्निमाहुरथो दिव्य: स सुपर्णो गरुत्मान्।
एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्त्यग्निं यमं मातरिश्वानमाहु:।। *(Rv I.164.46.)*
Indram mitram varunam agnim ahur atho divyah sa suparno garutman. ekam sad vipra bahudha vadanti agnim yamam matarisvanam ahuh.

With Thanks : Priyavrata Das
To Be Continue...

सत्यार्थ प्रकाश नि:शुल्क वितरण योजना

सभा की यह योजना सत्यार्थ प्रकाश को भारत ही नहीं विश्व की सभी महत्वपूर्ण लाईब्रेरीस, विश्वविद्यालय, उच्च शिक्षा संस्थानों, दूतावास, सरकारी कार्यालयों तक पहुंचाने की है। इसके लिए एक स्थाई निधि बनाई गई है। हर तीन महीने के ब्याज से सत्यार्थ प्रकाश लगातार भेजी जा रही है। ये एक सतत योजना है, जितना धन होगा उतनी ही ये तेजी से सब लाईब्रेरी में पहुंच जाएगी। विदेशों में इनका इंग्लिश वर्जन तथा सब प्रान्तों एवं अन्य भाषा वाले देशों में उनकी भाषा में (यदि उपलब्ध है तो) भेजे जाने की योजना है अभी तक का सभा का अनुभव बहुत उपयोगी रहा है। आशा है कि ये योजना अपने उद्देश्य को पूर्ण करने में कामयाब रहेगी।
आपका सहयोग: आप अपने नाम से पारिवारिकजन के नाम से एक निधि बना सकते हैं। जो निधि हमेशा आपके शुभ नाम से स्थिर रहेगी और ब्याज से सत्यार्थ प्रकाश लाईब्रेरी में पहुंचाई जाती रहेगी अथवा आप एक मुश्त राशि प्रत्येक वर्ष जन्मदिवस, विवाह वर्षगांठ के अवसर पर सभा को देकर जितनी चाहें सत्यार्थ प्रकाश लाईब्रेरी में भिजवा सकते हैं। वर्तमान स्थूलाक्षर (बाईडिंग वाली सत्यार्थ प्रकाश) मूल्य भेजने के खर्च सहित लगभग 200/- रुपये प्रति है।

-महामंत्री

पाखंड और अन्धविश्वास देश को फिर गुलाम बनाएगा!

श्री सुरेन्द्र कुमार रैली जी द्वारा लिखित पुस्तिका 'पाखंड और अन्धविश्वास देश को फिर गुलाम बनाएगा' की तृतीय किश्त में आपने तांत्रिकों का खोफ-हमारा भ्रम पर श्री रैली जी के विचार जाने। आइये आगे और पढ़ें ***-सम्पादक***

गतांक से आगे **शनि देवता की ठेकेदारी और हमारा भ्रम :** आपने देखा होगा कि प्रत्येक शनिवार को सड़कों पर, सार्वजनिक स्थलों, अस्पतालों के सामने, एक-एक किलो मी0 की दूरी पर शनि देवता विराजमान होते हैं। पुराने कनस्तर से हाथ-पैर, मुँह व धड़ काटकर शनि देवता को बनाया जाता है। जमीन पर दो ईटों का सहारा देकर इन्हें सड़कों के किनारे टिका दिया जाता है। एक दो फूलों के हार भी चढ़ा दिये जाते हैं। जनता इसे देवता मानकर नतमस्तक होती है व श्रद्धानुसार पैसे भी रख देती है। शनि देवता का रचयिता कुछ ही दूरी पर बैठा यह तमाशा देखता रहता है और शाम को पैसे गिनकर जेब के हवाले कर शनि देवता को उठाकर चला जाता है। इस प्रकार शनि देवता के नाम पर घर-घर में एल्यूमिनियम के कटोरे में सरसों का तेल डालकर लोग आते हैं और आटा व पैसे इकट्ठे करते हैं जिससे जो मिल जाए वही सही। शनि देव... का उच्चारण करते हुए सुबह होते ही दरवाजे पर आ धमकते हैं आपको भले ही याद हो कि आज शनिवार है, परन्तु शनि देव के यह ठेकेदार कैसे भूल सकते है शनिदेव कल्याण करें, आपका उद्धार हो - इस वाक्य को सुनते ही जनता विशेषकर स्त्रियाँ इन्हें दक्षिणा देती है। यह सोचकर कि वह जो कुछ दे रही है वह शनि के प्रकोप से बचने के लिए शनि देव को अर्पित किया गया है । यही कारण है कि आजकल तीव्रगति से शनि मंदिरों के सामने लंबी कतारों में भक्तजन तेल की शीशी हाथ में लिए दिखाई पड़ते हैं जो शनि देवता पर तेल चढ़ाने के लिए लालायित रहते हैं। 30-40 किलो तेल हर शनिवार को इक्ट्ठा हो जाता है लगभग 4000 रूपये का तेल चढ़ावे में चढ़ जाता है और पैसा अलग से । क्या वास्तव में यह तेल शनि देवता सेवन करते हैं? या इसके पीछे कुछ और राज छिपा है। यह तेल आटा इत्यादि (पैसा छोड़कर) अर्पित वस्तुएँ तो सायंकाल को परचून की दुकान पर होती हैं। एकत्रित किया गया सरसों का तेल व आटा दुकान पर बेच कर पैसे बनाए जाते हैं।

आज से लगभग 10 वर्ष पूर्व एक व्यक्ति सफेद कपड़ों में शनि देवता के नाम पर भीख मांगने आया करता था। पता चला कि आज उसने सौ गज जगह में एक अच्छा खासा मंदिर बना लिया है। अब वह भिक्षा के लिए द्वार-द्वार नहीं भटकता, मंदिर में सिल्क का कुर्ता-पजामा पहने, गले में सोने की भारी चैन, अंगूठी और शानदार विदेशी घड़ी पहने अन्य पंडितों के साथ भजन कीर्तन में लीन रहता है। पौराणिक पंडितों के अनुसार शनिवार के दिन शनि देवता की मूर्ति पर तेल चढ़ाने से शनि का दुष्प्रभाव कम होता है, शनि देवता सताता नहीं अपितु प्रसन्न होता है । आप ही सोचिये इस वैज्ञानिक युग में भी लोग इतने अंधविश्वासी हैं कि जिसकी कल्पना नहीं की जा सकती । पत्थर की प्रतिमा पर राई का तेल अर्थात् सरसों का तेल चढ़ाना कहाँ की समझदारी है । पहली बात तो शनि ग्रह इतना बड़ा है कि उसकी मूर्ति का निर्माण पृथ्वी पर संभव ही नहीं, दूसरी बात शनि ग्रह गोल है परन्तु लोगों ने शनि की मूर्ति काले पत्थर को तरासकर उसकी आँख, नाक, कान इत्यादि बना रखे हैं यह काल्पनिक काले पत्थर को शनि मान लेना अज्ञानता को दर्शाता है। जहाँ तक रही तेल चढ़ाने की बात पुराणों में इस विषय में एक कथा प्रचलित है कि हनुमान और शनि की आपस में किसी बात पर लड़ाई हुई और हनुमान जी ने शनि को खूब मारा और हड्डी पसली एक कर दी । जहाँ-जहाँ शनि को चोट लगी वहाँ-वहाँ खरोच आने के कारण लहू बहने लगा उसे रोकने के लिए लोगों ने राई (सरसों) का तेल लाकर लगाया जिससे घाव भरने लगे बस यही कारण है कि आज तक शनि के घाव को भरने के लिए राई के तेल का इस्तेमाल करते हैं लगता है बेचारे शनि देवता के घाव आज तक भी नहीं भर पाए हैं ।

शनिग्रह जड़ पदार्थ है और हनुमान जी श्री रामचंद्र जी के सेवक ! भला इनकी आपस मे कब भेंट हुई, कोई नहीं जानता। हो सकता है शनि नाम का कोई देवता रहा हो, फिर भी बात बनती नहीं । देवता लोग लड़ते नहीं है। हनुमान जी वेदों के बहुत बड़े विद्वान थे जो रामचंद्र जी को उनके वनवास-काल में मिले थे। पूरी रामायण में शनि का नाम कहीं नहीं आता इससे तो यही जाहिर होता है कि यह कहानी बनावटी है।

शनि (ग्रह) देवता से सभी डरते हैं कि उसकी छाया किसी पर पड़ जाए तो वह व्यक्ति दर-दर की ठोकरें खाता है। भटकता रहता है एक जगह नहीं रह पाता, देश विदेश की यात्रा करते हुए समय कटता है। अगर ऐसा है तो द्वार-द्वार पर शनि की तस्वीर डोली में लिए तेल मांगने वाले पर शनि की छाया का सबसे अधिक प्रकोप है क्योंकि वह बेचारा तो तेल मांगने के लिए द्वार-द्वार भटकता ही रहता है।

काँवड कथा: युवाशक्ति को काँवड के निरर्थक कार्य में झौंकने का षड़यन्त्र पाखंड और अन्धविश्वास को फैलाने में मीडिया की बहुत बड़ी भूमिका है। टी.वी. के असंख्य चैनलों और समाचार पत्रों ने अधिक से अधिक धन कमाने हेतु, लगता है कि इस अनैतिक कार्य को करने की जिम्मेदारी ले ली है। कोई बिरला चैनल ही होगा जो इसमें शामिल न हो।

22 जुलाई 2014 को दिल्ली के प्रतिष्ठित समाचार-पत्र में ये काँवड कथा और शिवलिंग बस वहीं स्थापित हो गया। यह लेख पढ़ने के बाद ऐसा लग रहा है कि यह लोग वर्तमान युग में भी धार्मिक जगत को धर्म प्रचार के साथ-साथ अन्धविश्वासों की ओर जाने की खुली छूट दे रहे हैं। कथा इस प्रकार कही गई है कि रावण ने हिमालय पर्वत पर शिवजी के दर्शन के लिए घोर तपस्या की और शिवजी पर अपना एक-एक सिर काट कर चढ़ाना शुरू कर दिया । उसने अपने नौ सिर चढ़ा दिए । जब वह अपना दसवाँ सिर चढ़ाने को उद्यत हुआ तो भगवान शंकर ने दर्शन दिए और प्रसन्न होकर रावण के दसों सिरों को पहले जैसा ही कर दिया । रावण ने उनसे शिव लिंग की मांग की तो शिवजी ने रावण को इस शर्त के साथ लिंग ले जाने का वर दिया कि अगर वह लिंग को ले जाते समय जमीन पर रख देगा तो लिंग वहीं स्थापित हो जाएगा । रावण शिव लिंग लेकर चल दिया । सभी देवताओं को चिंता हो गई और वह विष्णु जी के पास गए ताकि रावण को शिव लिंग ले जाने से रोका जाए। भगवान विष्णु जी ने तीन पवित्र नदियों गंगा, यमुना, और सरस्वती से कहा कि वे रावण के पेट में प्रवेश कर जाएँ। नदियों के जल के कारण रावण को तेज लघुशंका लगी तो उसने गडरिए के रूप में खड़े विष्णु जी को कहा कि वह शिव लिंग पकड़े रखें और वह लघुशंका करके उसे वापिस लेने आते हैं। रावण की लघुशंका समाप्त ही नहीं हो रही थी और उस लघुशंका से एक सरोवर का निर्माण हो गया था। जिसे शिव गंगा कहते है। इस बीच गडरिए ने शिव लिंग भूमि पर रख दिया और वरदान के अनुसार वह वहीं स्थापित हो गया । रावण ने वापिस आकर जब यह देखा तो उसे बड़ा गुस्सा आया और उसने उस पर जोरदार हाथ मारा तो आधा शिव लिंग जमीन में धँस गया और आधा ऊपर रह गया । लेखक के अनुसार जिस स्थान पर यह शिवलिंग रखा गया है वह भारत के वैद्यनाथ धाम भगवान शंकर के 12 ज्योतिर्लिंगों में से एक है । प्रश्न उठता है कि शेष 11 लिंग कैसे - कैसे स्थापित हुए होंगे और उन की कथा क्या है? इस कथा में विरोधाभास है। एक तरफ आप कह रहे है कि "शिवलिंग बस वहीं स्थापित हो गया" और कुल संख्या 12 बता रहे हो?

भारत 21वीं शताब्दी में प्रवेश कर चुका है और आप देश के युवाओं को ऐसी भ्रान्तिपूर्ण तथ्यों से परे कहानी छाप रहे हैं जिस की क्या आवश्यकता पड़ गई? इससे देश और दुनिया में अधंविश्वास बढ़ेगा। युवा पीढ़ी सोचेगी कि भक्ति तो सिर काट कर ही होती है और सिर कटने के बाद भी आदमी जीवित रह सकता है? इतना ही नहीं यदि भगवान शंकर प्रसन्न हो जाएँ तो वह दुबारा वैसे ही सिर लगा भी सकते हैं? यह आज के चिकित्सा विज्ञान के मुँह पर तमाचा है। यदि सब ऐसे की ठीक हो जाते हैं तो अस्पताल खुलवाने की क्या जरूरत है? युवा पीढ़ी यह भी सोचेगी कि भक्ति तो सिर काटकर ही होती है। तथा यदि ईश्वर सिर काटने से खुश होता है तो वह ईश्वर नहीं हो सकता । ऐसा संसार के सब श्रेष्ठ पुरूषों का मत है। प्रश्न यह भी उठता है कि रावण को देने से पहले क्या लिंग जमीन पर नहीं रखा था? यदि जमीन पर नहीं था तो कहाँ था? लिंग पूरा दिया था या लिंग का टुकड़ा दिया था? क्या शिवजी देवता नहीं थे? जो उन्हें चिन्ता न हुई। तथा कौन से देवता विष्णु जी के पास गए? क्या विष्णु जी और शिवजी में कोई गुटबाजी थी? यदि थी तो क्या देवत्व के गुण समाप्त हो रहे थे?

यह विश्व का सबसे अवैज्ञानिक कथन होगा कि एक मनुष्य के पेट में तीन नदियों का जल जा रहा है। कैसे? कहाँ से प्रवेश कर सकता है। यह आपको समझना पड़ेगा। क्योंकि सामान्य बुद्धि का मनुष्य भी यह समझ सकता है कि नदियों का जल कभी पेट में सीधे प्रवेश नहीं करता। क्या आप नई पीढ़ी को विज्ञान के ज्ञान से अपरिचित रखना ही उचित समझते हैं। यह कथन भी कपोल कल्पना मात्र प्रतीत होता है क्योंकि विज्ञान के अनुसार एवं प्रत्यक्ष प्रमाण के आधार पर यह सिद्ध नहीं होता कि तीनों नदियों का जल रावण के पेट में प्रवेश कर गया होगा, तो लघुशंका कैसी?

सबसे अधिक अशोभनीय एवं अश्रद्धा पैदा करने वाली बात है कि "रावण की लघुशंका से एक सरोवर का निर्माण हो गया था। जिसे शिवगंगा कहते हैं। लघुशंका और गंगाजल में जमीन-आसमान का अंतर होता है। कथा के अनुसार काँवड़िए रावण की लघुशंका में स्नान करते है। यह तो काँवड़ियों का भी अप्रत्यक्ष अपमान कर रहे हैं अथवा मनगढ़त कथा को तोड़ मरोड़कर प्रस्तुत कर रहे हैं।

इस तरह की कहानियाँ बनाने वाले लोग हिन्दुओं का सीधा-सीधा अपमान कर रहें है जिन पर किसी भी सम्प्रदाय का व्यक्ति कटाक्ष करने को तैयार हो जाएगा। ऐसी कथाओं के आधार पर ही आज करोड़ों युवकों की युवाशक्ति को काँवड यात्रा में निरर्थक झौंका जा रहा है और उनको कौन लोग और कैसे लोग प्रोत्साहन दे रहे हैं? यह शोक का विषय है। यह बात एकदम शतप्रतिशत सही है कि पाखण्ड की भव्यता को जितनी बड़ी मात्रा में दिखाओगे, उतने ही साधारण लोग उसमें फँसते जांएगे जिसका परिणाम उनके धन, समय और बुद्धि के शोषण के अतिरिक्त कुछ नहीं है।

बस! दिमाग की थोड़ी सी खिड़की खोल दें : इस प्रकार के अंधविश्वास और पाखंड से लड़ने का एक मात्र उपाय इनका जमकर जबरदस्त खण्डन करना ही है। जो लोग इसे अपने धर्म, विश्वास और आस्था का प्रश्न बनाकर अड़ जाते हैं, वह नासमझ है। यह सत्य है कि विश्वास एक ऐसी चीज है जिसे हम हथौड़ा मारकर तोड़ नहीं सकते। लेकिन यदि विश्वास को बदला जा सकता है तो केवल सोचने से और समझने से, बार-बार उस के विश्वास गलत कहने के बजाय आप उसके दिमाग की थोड़ी सी खिड़की खोल दीजिए ताकि वह अपने विश्वास पर शक करने लगे । और जब वह स्वयं उस विषय पर सोचने और तर्क करने लगेगा तो अंततः वह स्वयं अपने विश्वास में परिवर्तन कर लेगा।

-सुरेन्द्र कुमार रैली, 09810855695

पृष्ठ 1 का शेष

धंधा बनता धर्म ...

...भारत के लोग बड़े भोले हैं कोई भी इनके सामने खड़ा होकर खुद को भगवान या दुर्गा देवी का अवतार कह देता है और ये मान लेते हैं। पर दु:ख तब होता है जब कुछ पढ़े-लिखे , सिनेमा जगत से जुड़े लोग अभिनेता, राजनेता भी इन पांखडियों के भक्त बनकर इन लोगों की झोली में धन भरते हैं ...

व्यवस्थाओं का मजाक तो नहीं? और इन बाबाओं के नाम पर आने वाला पैसा कहां से आता है?

भारत के लोग बड़े भोले हैं कोई भी इनके सामने खड़ा होकर खुद को भगवान या दुर्गा देवी का अवतार कह देता है और ये मान लेते हैं। पर दु:ख तब होता है जब कुछ पढ़े- लिखे , सिनेमा जगत से जुड़े लोग अभिनेता, राजनेता भी इन पांखडियों के भक्त बनकर इन लोगों की झोली में धन भरते हैं। एक राधे मां के मामले में ही उनके कई प्रसिद्ध अनुयायी निकल आये। अमृतसर से पूर्व सांसद व क्रिकेटर नवजोत सिंह सिद्धु, फिल्म निर्माता सुभाष घई अभिनेता से नेता बने पूर्वी दिल्ली से सांसद मनोज तिवारी और फिल्म अभिनेत्री राखी सावंत जैसे लोग जो समाज को अच्छी दिशा दे सकते हैं किन्तु शर्म की बात है कि ये लोग भी पांखड के साथ इन आचरण हीन लोगों का साथ देते हैं। अब यह साधारण सी बात है कि जिस वस्तु की खपत ज्यादा होती है उसकी दुकान भी ज्यादा खुल जातीं है और यह भी स्वभाविक सी बात है कि नकली सामान ज्यादा बनने लगा है। भारत में धर्म की भी यही दशा हो गयी। आज पाखंड की वजह से सड़कों से लेकर मन्दिरों तक सवा रुपये से लेकर करोड़ों अरबो रुपयों तक धर्म मिलता है। आज कलयुग में इन लोगों ने धर्म को सबसे बड़ा बाजार बना दिया। मैं दान का विरोध नहीं करता मनुष्य अपनी दशा की परवाह किये बिना देश सेवा, संस्कृति, सभ्यता की रक्षा हेतु शक्ति भर धन देता है तब धर्म का धन धर्म के काम आता है। पर धर्म के नाम पर पाखंड फैलाकर मां, बापू, बाबा बनकर संवेदनशील, पवित्र रिश्तों की आड़ में सीधे-सच्चे लोगों को मूर्ख बनाकर उनका आर्थिक शोषण करना कहां का धर्म है?

संत तो आत्मा के दिग्दर्शन से परमात्मा को पाता है जो ऊंचे सिंहासन पर विराजमान होकर स्वयं का प्रदर्शन करे वह कैसा संत! वह संत नहीं वह कोई बहरुपिया अवश्य है और मां तो ममता की, वात्सल्य की खान होती है, जो अपनी संतानों को स्नेह बांटती है। जो खीर में थूककर उसे प्रसाद के रूप में वितरित कराती हो वह कैसी राधे मां वो जरूर कोई गंदगी की मिसाल होगी। प्रसिद्ध साहित्यकार आचार्य चतुर सेन शास्त्री ने कहा था- भारत धर्म प्रधान देश है और मनुष्य पाप का चोर है। इसलिये धर्म और पाप की बिना सहायता के मैं मानने वाला आदमी नहीं हूँ। मैं अपनी अंतरात्मा से भली-भांति जानता हूँ कि पाप और धर्म दोनों के खातों में भरपूर धन है और उसका सदुपयोग नहीं हो रहा है। पहले मैं धर्म के ठेकेदारों की बात करूंगा। मंदिरों, मस्जिदों और मकबरों की करोड़ों की आमदनी है, हजारों संस्थायें हैं जहां भावुक भक्तों का सोने-चांदी का मेह बरसता है। मैं पूछना चाहता हूँ इन ढोंगी बाबाओं से क्या धर्म का पैसा इनके भोग-विलास की वस्तु है? अनेक मौलवी महंतों के चरित्र कुछ पुराने राजाओं की तरह भ्रष्ट है। मैं इसके प्रमाण दे सकता हूँ फिर भी ये प्रश्न इतने मायने नहीं रखकर ये मायने रखता है कि धर्म का पैसा धर्म के काम में लगे यदि कोई स्वर्ग की चाह में या धर्म की प्राप्ति की चाह में इनके पास जाता है तो मैं बता दूं स्वर्ग की कामना और कल्पना कहीं मन में छिपी वासना का हिस्सा है और मैं अंत में इतना कहना चाहूँगा जिसमें परोपकार की भावना हो वह धर्म है। नि:स्वार्थ भाव से त्याग निष्ठा से परिपूर्ण देश सेवा सबसे बड़ा धर्म है। अब सोचना आप सबको है कि धन से धर्म चाहिये या पाखंड के खिलाफ हमारी मुहिम से जुड़कर देश धर्म के कार्यो में साथ दें। **-राजीव चौधरी**

आर्य समाज (अनारकली) मंदिर मार्ग, नई दिल्ली के तत्त्वावधान में श्रावणी पर्व आयोजित

आर्य समाज (अनारकली) मंदिर मार्ग, नई दिल्ली के तत्त्वावधान में दिनांक 25 से 27 अगस्त 2015 को श्रावणी पर्व का आयोजन किया जा रहा है। जिसके अन्तर्गत भजन संगीत, वेद प्रवचन होंगे।

निवेदक : डॉ. निशा पेशिन, प्रधान, ब्रिगेडियर ए.के. अदलखा, मंत्री

वेद प्रचार मण्डली

आर्य समाज के प्रचार-प्रसार के लिए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा वेद प्रचार व भजनोंपदेशक मण्डली की नियुक्ति की गई है। भारत के समस्त आर्य समाज भजनोपदेशक मण्डली को आमंत्रित कर महर्षि दयानन्द के सपनों को साकार करने हेतु श्री एस.पी. सिंह जी से संपर्क करें।

संपर्क सूत्र:- 09540040324

पुण्य स्मृति पर विशेष

महान स्वतंत्रता सेनानी एवं आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्ता

लेखनी के धनी इन्द्र विद्यावाचस्पति

महान स्वतंत्रता सेनानी एवं आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्ता श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति का जन्म 9 नवम्बर, 1889 में पंजाब के जालंधर जिले में लाला मुंशी राम जी के पुत्र के रूप में हुआ था। लाला मुंशी राम जोकि संयास लेने के बाद स्वामी श्रद्धानंद के नाम से विख्यात हुए। इन्द्र विद्यावाचस्पति की शिक्षा प्राचीन भारतीय परम्परा के अनुसार हुई। सात वर्ष की उम्र में उन्हें गुंजरावाला के गुरुकुल में अध्ययन हेतु भेजा गया। जिस समय में पढ़ाई में सामान्य युवकों का उद्देश्य सरकारी नौकरी करने का होता था वहीं दूसरी ओर पढ़ाई में बहुत तेज होने के बाद भी इन्द्र जी ने गुरुकुल कांगड़ी में अध्यापक बनना स्वीकार किया। इन्द्र जी संस्था के मुख्य अधिष्ठाता, उपकुलपति और बाद में कुलपति भी बने। हिन्दी पत्रकारिता में उनका योगदान ऐतिहासिक रहा और उन्होंने विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं का सम्पादन भी किया। आपके द्वारा रचित पुस्तक 'आर्य समाज का इतिहास' भाग 1 व 2 और 'मेरे पिता' बहु प्रसिद्ध हैं। वे देश के स्वतंत्रता आन्दोलन में भी भाग लेते रहे तथा अनेक बार कारावास भी गये। इन्द्र जी की मान्यता थी कि व्यक्तिगत जीवन में सत्य और अहिंसा का स्थान सर्वोपरि है, किन्तु अहिंसा को राजनीति में भी विश्वास के रूप में स्वीकार करने के पक्ष में वे नहीं थे। इसलिए उन्होंने गांधीजी से मतभेद होने के कारण 1941 में कांग्रेस से सम्बन्ध तोड़ लिया था। देश के स्वतंत्र होने पर उन्हें राज्य सभा का सदस्य मनोनीत किया गया और 23 अगस्त 1960 को ये महान हस्ती दिल्ली में रहते हुए हम सबसे विदा होकर हमेशा-हमेशा के लिए चली गयी। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य सन्देश परिवार इन्द्र जी को श्रद्धासुमन अर्पित करता है।

'आर्य समाज का इतिहास' भाग 1 व 2 और 'मेरे पिता' पुस्तकें वैदिक प्रकाशन 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध हैं। पुस्तक मंगाने हेतु संपर्क करें।

-विजय आर्य, मो. 09540040339

संस्कृतम्

आतंकवाद: ज्वलंत समस्या

क: आतंकवाद:? उचितेन अनुचितेन वा साधनेन स्वस्य अभीष्ट-साधनम् आतंकवाद:। यथा-परधन-हरणम्, परस्त्रीहरणम्, परक्षेत्रहरणम्, अन्यस्य सर्वस्व-हरणेन स्वोन्नति-साधनम्। अनुचितसाधनानाम् उपयोगेन परस्य हत्या, परस्य धन-हरणम् इत्यादिकं क्रियते।

आतंकवादस्य कारणनि - संक्षेपत: एतानि कारणानि सन्ति-स्वार्थपरता स्वार्थनिबद्धा संकुचिता दृष्टि: वा, आतंकवादस्य मूलं कारणं वर्तते। एषैव स्वार्थदृष्टि: साधनरूपेण आतंकवादं पोषयति प्रसारयति च। यथा-क्षेत्रवाद:, भाषावाद:, धर्मान्धता,आर्थिकी विषमता, समन्वयस्य अभाव:। न्यायपालिकाया दुर्बलत्वम्, नैतिक-मूल्यानां ह्रास:, प्रशासनस्य निष्क्रियत्वम्, राजनीतिकं वा कारणम्।

अद्यत्वे क्षेत्रवादो विशेषरूपेण वैमनस्यं जनयति। भारते वर्ग विशेष: स्वीयां सांस्कृतिकीं श्रेष्ठतां साधयितुं सांप्रदायिकं संघर्ष प्रेरयति। चौर्यादि-कार्येषु आतंकवादस्य मूलकारणम् आर्थिकं वर्तते। शिक्षितेषु अवृत्ति-समस्या चौर्यादिकस्य कारणं वर्तते। ते धनार्थम् अपराधवृत्तिम् आश्रयन्ते।

आतंकवादस्य कुप्रभाव: - आतंकवादस्य कुप्रभाव: सांस्कृतिकम् आर्थिकं सामाजिकं धार्मिकं च पक्षं दूषितं करोति। आतंवादस्य कारणेन समाजे हिंसा, अनैतिकता, अराजकता च वर्धते। जनताया मनोबलं क्षीयते, आसामानिकानाम् उत्साह: वर्धते।

आतंकवादस्य निरोधोपाया: - आतंकवादस्य निरोधार्थं राष्ट्रे नैतिक-शिक्षा अनिवार्या स्यात्। नैतिकं शिक्षणं मनुष्ये कर्तव्याकर्तव्यस्य ज्ञानं प्रसारयति। आतंकवादस्य निरोधार्थं राष्ट्रीय-प्रशासनस्य महती भूमिका वर्तते। प्रशासनम् असामाजिकं तत्त्वं समूलं विनाशयेत्। स्वदण्डनीति कठोरां कुर्यात्, 'दण्ड शास्ति प्रजा: सर्वा:, दण्ड एवाभिरक्षति'। यदि दण्डव्यवस्था कठोरा स्यात्, तदा असामाजिकानां तत्त्वानां मनोबलं क्षीयते। शिक्षणालयेषु अपि आतंकवादस्य विरुद्धं प्रशिक्षणं स्यात्।

-डॉ. कपिलदेव द्विवेदी

आर्य समाज मंदिर, अशोक विहार, फेस 1, नई दिल्ली के तत्त्वावधान में श्री कृष्ण जन्माष्टमी एवं श्रावणी उत्सव

आर्य समाज मंदिर, अशोक विहार, फेस 1, नई दिल्ली के तत्त्वावधान में दिनांक 27 से 29 अगस्त तक श्री कृष्ण जन्माष्टमी श्रावणी उपाकर्म उत्सव का आयोजन किया जा रहा है। जिसमें 'प्राणायाम एवं ध्यान योग साधना' एवं सामवेद यज्ञ होगा। **निवेदक : श्री राममेहर सिंह प्रधान, श्री जीवन लाल आर्य मंत्री**

साप्ताहिक आर्य सन्देश

24 अगस्त से 30 अगस्त, 2015

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2015-2017

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 27 अगस्त/ 28 अगस्त, 2015

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0 (सी0) 139/2015-2017

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथिः बुधवार 26 अगस्त, 2015

''शत हस्त समाहर सहस्र हस्त सं किर'' - सौ हाथों से कमाओ हजार हाथों से दान करो

पीड़ितों की सेवा ही हम सबका राष्ट्रीय एवं धार्मिक कर्त्तव्य

आर्यजन दिल खोलकर दान दें

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के आह्वान पर सभा को नेपाल भूकम्प पीड़ितों की सहायतार्थ प्राप्त दान सूची

गतांक से आगे :-

आर्य समाज, पुष्पांजलि एंक्लेव, पीतमपुरा, दिल्ली द्वारा एकत्रित की गई दान राशि

332. श्री सुभाष आर्य 1000/-
333. श्रीमती मीरा अरोड़ा 500/-
334. श्रीमती प्रभा नागपाल 500/-
335. श्री वेद व्रत कौशल 500/-
336. श्री सूर्य कान्त 500/-
337. विजय भंडारी 500/-
338. श्री रमेश आहूजा 500/-
339. श्रीमती नीता मिनोचा 500/-
340. गुप्त दान 500/-

आर्य प्रतिनिधि सभा, बंगाल 1,00,000/-

आर्य समाज, भीमगंज मण्डी, कोटा, (राजस्थान) 25000/-

आर्य समाज मुण्डेरा बाजार, प्रयाग 2100/-

इस मद में दान देने वाले दानी महानुभावों के नाम इसी प्रकार आर्य सन्देश के आगामी अंकों में भी प्रकाशित किये जाएंगे।

-मंत्री

इस मद में दान देने वाले दानी महानुभावों के नाम इसी प्रकार आर्य संदेश के आगामी अंकों में भी प्रकाशित किये जाएंगे। -महामंत्री

प्रतिष्ठा में,

स्वास्थ्य चर्चा

वर्षा ऋतु में सेवन करने योग्य आहार

स्वास्थ्य चर्चा के अन्तर्गत पिछले अंक में बरसात के मौसम में आपका आहार-विहार कैसा हो, के विषय में जानकारी हासिल की थी। इसी विषय में चर्चा को आगे बढ़ाते हुए कुछ और जानकारी प्राप्त करते हैं-

वर्षा ऋतु और हमारा आहार : वर्षा ऋतु में जामुन और कच्चे आम का शर्बत बहुत लाभप्रद होता है। जामुन का शर्बत पीने से जी मिचलाना, उल्टी, दस्त, खूनी दस्त और बवासीर में आराम आता है। आम (गुठली के भीतर का भाग) और जामुन की गुठली पीस कर बारीक चूर्ण करके सम मात्रा में मिला लें। इसे आधा-आधा चम्मच सुबह शाम पानी के साथ पीने से आमातिसार यानी आंव, खून के दस्त तथा मधुमेह रोग में आराम आता है। वर्षा ऋतु में मक्का के भुट्टे भून कर नीबू और काला नमक लगाकर खाने के बाद ऊपर से एक कप छाछ पीने से स्वास्थ्य एक दम दुरुस्त रहता है।

चुनाव समाचार

वेद मंदिर (आर्य समाज ब्रह्मपुरी)

प्रधान - **श्री राकेश वर्मा**
मंत्री - **श्री अनिल टण्डन आर्य**
कोषाध्यक्ष - श्री भूषण कुमार

आर्य समाज, बी.एन.पूर्वी शालीमार बाग दिल्ली के तत्त्वावधान में

श्रावणी उपाकर्म एवं वेद कथा का आयोजन

आर्य समाज, बी.एन.पूर्वी शालीमार बाग दिल्ली-88 द्वारा दिनांक 31 अगस्त से 6 सितम्बर 2015 को श्रावणी उपाकर्म एवं वेद कथा का आयोजन किया जा रहा है, पूर्णाहूति एवं समापन समारोह दिनांक 6 सितम्बर को होगा। ब्रह्मा एवं प्रवक्ता आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय एवं भजनोपदेशक श्री राजवीर शास्त्री होंगे।

विनीत : श्री भूदेव शर्मा, प्रधान; श्री नरेन्द्र अरोरा, मंत्री; मो 09312595700

आर्य समाज भोगल, जंगपुरा के तत्त्वावधान में श्रावणी पर्व एवं 11 कुण्डिय यज्ञ का आयोजन

आर्य समाज भोगल, जंगपुरा के तत्त्वावधान में दिनांक 3 से 6 सितम्बर 2015 को श्रावणी पर्व एवं 11 कुण्डिय यज्ञ का आयोजन किया जा रहा है। जिसमें मुख्य वक्ता आचार्य बलवीर शास्त्री जी होंगे।

निवेदक : डॉ. जे.पी. गुप्ता, प्रधान,मो. 09811791340 श्री पन्ना लाल खुराना, मंत्री, मो. 09811111403

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2 नारायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1, फोन:23360150, 23365959, E-mail: aryasabha@yahoo.com; Web: thearyasamaj.com से प्रकाशित

सम्पादक: धर्मपाल आर्य सह सम्पादक: विनय आर्य व्यवस्थापक: शिव कुमार मदान सह व्यवस्थापक: आर्य डॉ. ओम प्रकाश भटनागर, एस.पी. सिंह